



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)



रचनाकार :-
.....विनीता सिंह चौहान.....

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

**हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति**

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331



Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं।
प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।
रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना
एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना है।

**हिन्दी
से ही है
पहचान...**

**विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बेहतर कल...**

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - विनीता सिंह चौहान

विवाह की बढ़ती आयु के जनसांख्यिकी प्रभाव



विवाह की बढ़ती आयु के जनसांख्यिकी प्रभाव

पिछले कुछ दशकों में भारत सहित विश्व के अनेक देशों में विवाह की औसत आयु में निरंतर वृद्धि देखी जा रही है। आधुनिक समाज में विवाह अब केवल सामाजिक दायित्व नहीं, बल्कि एक व्यक्तिगत निर्णय बनता जा रहा है। शिक्षा, करियर और आत्मनिर्भरता के कारण ही नहीं बल्कि शिक्षा के विस्तार, महिलाओं की आर्थिक भागीदारी, शहरीकरण, बदलती सामाजिक सोच, पाश्चात्य देशों का अंधानुकरण और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के कारण युवावर्ग विवाह को अब जीवन के उत्तरार्ध में प्राथमिकता देने लगा है। विवाह की यह बढ़ती आयु केवल सामाजिक परिवर्तन नहीं है, बल्कि इसके दूरगामी जनसांख्यिकी प्रभाव भी हैं, जो जनसंख्या वृद्धि दर, आयु संरचना और परिवार प्रणाली को गहराई से प्रभावित कर रहे हैं।

विवाह की आयु बढ़ने के कई प्रमुख कारण हैं :

- उच्च शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा, रोजगार और करियर को प्राथमिकता, आर्थिक स्थिरता की आवश्यकता, विशेष रूप से महिलाओं में उच्च शिक्षा और आत्मनिर्भरता ने विवाह के पारंपरिक समय को बदल दिया है। साथ ही दहेज, पारिवारिक कुरीतियां , बहु विवाह प्रथा, पर्दाप्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों से बचने की कोशिश और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बढ़ती भावना प्रमुख हैं।
- शहरीकरण और सामाजिक संरचना : शहरी क्षेत्रों में विवाह की आयु अपेक्षाकृत अधिक होती है। शहरी जीवनशैली, महँगाई और सीमित संसाधनों के कारण लोग छोटे परिवार को प्राथमिकता देते हैं। इससे संयुक्त परिवार प्रथा खत्म हो रही है। और युवा वर्ग में व्यक्तिगत स्वतंत्रता बढ़ रही है इस प्रमुख कारण की वजह से भी विवाह की आयु में वृद्धि हुई है।
- विवाह की बढ़ती आयु आधुनिक समाज की वास्तविकता है। जिससे भारतीय पारिवारिक संरचना भी प्रभावित हो रही है। अतः इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि विवाह की बढ़ती आयु से जनसांख्यिकी प्रभाव न तो पूरी तरह नकारात्मक हैं और न ही पूर्णतः सकारात्मक।

विवाह के बढ़ती आयु के सकारात्मक प्रभाव

- विवाह की आयु बढ़ने का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव जन्म दर पर पड़ता है। जब विवाह देर से होता है, तो प्रजनन काल की अवधि स्वाभाविक रूप से कम हो जाती है। इससे बच्चों की संख्या घटती है

और कुल प्रजनन दर (Total Fertility Rate) में कमी आती है। भारत जैसे देश में यह परिवर्तन जनसंख्या नियंत्रण की दृष्टि से सकारात्मक माना जा सकता है, क्योंकि इससे जनसंख्या विस्फोट की समस्या पर अंकुश लगता है।

- आधुनिक समय में 35 एवं 40 वर्ष की उम्र में विवाह करने वाले स्त्री एवं पुरुष करियर के साथ साथ जीवनसाथी के तौर पर भी जीवन यापन करने के लिए परिपक्व निर्णय लेने की क्षमता रखते हैं जिसकी वजह से अलगाव एवं तलाक की दरें कम होती हैं।

--भारतीय समाज का महिला वर्ग अब घर परिवार एवं ग्रहणी तक सीमित न होकर उच्च शिक्षित होकर विभिन्न क्षेत्रों में आगे आ रही है एवं समय के साथ उन्नति कर देश की आर्थिक स्थिति में भी अपना योगदान दे रही है। वैसे भी साक्षर स्त्री घर परिवार एवं देश की दूरी होती है और साक्षर होने से उनकी पीढ़ियां उच्च शिक्षा को प्राप्त करती है जिससे कि जीवन शैली में सकारात्मक बदलाव आता है।

--विवाह की आयु बढ़ने के कारण स्त्रियां उच्च शिक्षा प्राप्त करती हैं एवं परिवार की आय में सहयोग देती हैं जिससे आज के परिवार सीमित होते जा रहे हैं एक या दो बच्चे होने की वजह से उनकी बेहतर शिक्षा पर निवेश किया जा रहा है। बेहतर पोषण, चिकित्सा सुविधा और जागरूकता के कारण शिशु मृत्यु दर में भी कमी आई है।

विवाह के बढ़ती आयु के नकारात्मक प्रभाव

- विवाह की बढ़ती आयु और कम जन्म दर के कारण जनसंख्या की आयु संरचना में परिवर्तन होता है। युवा जनसंख्या का अनुपात धीरे-धीरे घटता है और वृद्ध जनसंख्या का अनुपात बढ़ने लगता है। यह स्थिति भविष्य में जनसंख्या के वृद्धावस्था की ओर बढ़ने (Aging Population) का संकेत देती है। इसके परिणामस्वरूप पेंशन, स्वास्थ्य सेवाओं और सामाजिक सुरक्षा पर दबाव बढ़ सकता है।

- विवाहकी बढ़ती आयु के कारण परिवार छोटे होते जा रहे हैं। एकल संतान या दो बच्चों का चलन बढ़ रहा है। संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवार अधिक प्रचलित हो रहे हैं। इससे पारिवारिक संबंधों की प्रकृति बदल रही है और सामाजिक सहयोग की पारंपरिक संरचना कमजोर पड़ रही है।

- भारत जैसे युवा आबादी वाले देश के लिए जनसंख्या लाभांश (Demographic Dividend) एक महत्वपूर्ण अवसर माना जाता है। किंतु यदि विवाह की आयु लगातार बढ़ती रही और जन्म दर में तीव्र गिरावट आई, तो भविष्य में कार्यशील आयु वर्ग की जनसंख्या घट सकती है। इससे आर्थिक विकास की गति प्रभावित होने की संभावना रहती है।

- देर से विवाह होने की वजह से लिंग अनुपात (Sex Ratio) पर प्रभाव पड़ता है क्योंकि 35 वर्ष की आयु के पश्चात प्रजनन क्षमता धीरे-धीरे कम होने लगती है। आधुनिक समय में जीवन स्तर को उच्च बनाने हेतु उच्च नौकरीपेशा एवं एक लंबे कार्य अंतराल की वजह से लोगों की जीवन शैली में परिवर्तन आया है लोग अल्कोहल एवं अन्य नशे की तरफ प्रभावित हो रहे हैं कम नींद और अधिक वर्कलोड के कारण स्त्री और पुरुष दोनों में प्रजनन क्षमता कम हो रही है इनफर्टिलिटी की समस्या बढ़ रही है।

- वहीं दूसरी ओर कुछ परिवारों में एकल संतान की चाहत में पुत्र-प्राप्तिका दबाव कुछ क्षेत्रों में बढ़ने से IVF व प्रजनन तकनीकों का उपयोग करने करने से लिंग चयन का जोखिम भी बढ़ता है।

- विवाह की बढ़ती आयु स्त्री में मातृत्व को भी प्रभावित कर रही है। करियर नौकरी में उच्च अवसर अंतर्राष्ट्रीय एवं अंतर राज्यीय माइग्रेशन आदि की वजह से आधुनिक समाज में शादीशुदा महिलाएं बच्चों को बाधक मानती हैं अतः करियर की वजह से स्त्रियां मातृत्व सुख नहीं चाहती हैं। जिसके लिए लगातार गर्भनिरोधक (contraceptive) उपयोग करनेसे उनके स्वास्थ्य पर भी असर पड़ता है और कैंसर जैसी बीमारियां हमारे समाज में वृहद रूप लेती जा रही हैं

-- दहेज, पारिवारिक कुरीतियां एवं अन्य सामाजिक कुरीतियों से बचने की कोशिश और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बढ़ती भावना के कारण युवा वर्ग सामाजिक बंधन को अस्वीकार करते हुए लिव इन रिलेशनशिप को प्राथमिकता देते हैं। जिससे समाज और परिवार दोनों प्रभावित होते हैं। हमारी भारतीय संस्कृति विवाह पूर्व या विवाह के बिना शारीरिक संबंध को मान्यता नहीं देती है। लिव इन रिलेशनशिप समाज को नैतिक पतन की ओर ले जाता है एवं कई बार परिस्थितियां अपराध को जन्म देती हैं।

- आज के समय में स्त्री और पुरुष दोनों वर्ग समान रूप से उच्च शिक्षा प्राप्त कर अपनी करियर को प्राथमिकता दे रहा है जिसकी वजह से भारतीय खान-पान की शैली भी प्रभावित हुई है। घर के बने हुए शुद्ध भोजन के स्थान पर वैकल्पिक रूप से बाहर के खाने एवं पैकड फूड को प्राथमिकता देने लगे हैं। जिसने जैसी डायबिटीज, मोटापा जैसी कई बीमारियों को निमंत्रण दिया है।

अंततः हम हम निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि

“विवाह की बढ़ती आयु केवल व्यक्तिगत निर्णय नहीं, बल्कि भारत की जनसंख्या संरचना, आर्थिक विकास और सामाजिक भविष्य को दिशा देने वाला महत्वपूर्ण कारक है।” आवश्यकता इस बात की है कि समाज और सरकार मिलकर इन परिवर्तनों को समझें और ऐसी नीतियाँ अपनाएँ, जो संतुलित जनसंख्या संरचना और सतत विकास को सुनिश्चित कर सकें।

- विनीता सिंह चौहान



लेखक परिचय

नाम - विनीता सिंह चौहान

इंदौर मध्य प्रदेश

स्वतंत्र लेखिका कवियत्री एवं बाल साहित्यकार





अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुदेशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**विनीता सिंह चौहान**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "एक लेख प्रतियोगिता" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों** को प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिन्दी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना



शब्द से संवेदन तक...

लेखन से परिवर्तन तक...

